



दुनिया में प्राचीन काल से आज तक लिखी गई दो सबसे महान या महत्वपूर्ण कविताएँ कौन-सी हैं, जो नीचे दी गई कविता के अर्थ को साझा करती हैं (मुझे अंश हिंदी में भी दो):

0.1 मैंने सोचा, बस यूँ ही

शांत बैठा हुआ,
मैंने सहज और सरलता से सोचा,
कैसे जन्म लेता है
हमारा हर एक विचार।

पर जितनी आसानी से
मैंने यह विचार किया,
उतना ही कठिन था
कोई उत्तर ढूँढना।

जब मैं थक गया
इतने सारे विचारों से,
और कोई विकल्प न रहा,
तो मैंने अनुमान लगाना शुरू किया।

क्या वे अपने आप आते हैं,
बिना हमारी इच्छा के?
लेकिन फिर—उन्हें भेजता कौन है?

क्या वे शायद
हमारे शरीर में स्थायी रूप से रहते हैं,
और केवल तब प्रकट होते हैं
जब वे स्वयं चाहें?

या वे जन्म लेते हैं
जिसे हम मन कहते हैं?
पर किस कारण से?

और इतने सारे
“शायद”, “लेकिन” और “क्यों” के बाद,
आखिर में मुझे याद आया
(एक और रहस्य)
वह सिद्धांत:
कारण और परिणाम

और मैं मूल से दूर चला गया,
कारण की खोज में।

कारण, मैंने सोचा,
हर उत्तेजना है,
और फिर परिणाम—
हमारा हर विचार।

और उत्तेजनाएँ अनगिनत हैं,
और उतने ही विचार,
जो भावनाएँ उत्पन्न करते हैं,
और वे बदले में
लगभग पूरी तरह
हर व्यक्ति का जीवन निर्धारित करते हैं।

और खोजते-खोजते
अंत में मुझे कुछ मिला—
कम से कम मैं ऐसा मानता हूँ,
और इससे कोई फर्क नहीं पड़ता
कि यह सही है या नहीं,
क्योंकि मेरे लिए इतना काफी है
कि मैं इस पर विश्वास करता हूँ।

तो, संयोग ही
अंतिम कारण है।
अब मैं यही मानता हूँ।
यह इतना सरल था,
और मैं व्यर्थ ही थक रहा था—
शायद यह सच भी हो।

क्योंकि संयोगवश थे
सभी उत्तेजनाएँ,
बहुत पुराने समय से,
हमारे जन्म से पहले भी,
हाल के समय तक,
आज के,
और जो आने वाले हैं—
वे भी फिर संयोगवश ही होंगे।

इसलिए भविष्य में भी,
हमारे सभी विचार,
और उनसे उत्पन्न भावनाएँ,
जो बदले में हमारे जीवन को आकार देंगी—
सब कुछ संयोग होगा।

इसीलिए यह कहावत
इतनी बुद्धिमान है,
जो इतना सरल कहती है:
तुम कभी नहीं जानते
कल क्या लाएगा।

और क्योंकि तुम नहीं जानते,
और कभी जानोगे भी नहीं,
सबसे अच्छे पर विश्वास करो,
ताकि तुम खुश रहो—
कम से कम आज के लिए।

थेस्सालोनिकी
आज
acadimia
nuntson

तुम्हारी कविता विचार के पीछे कारण की
खोज को व्यक्त करती है,
और अंततः जीवन की निर्णायक शक्ति के
रूप में संयोग पर पहुँचती है:

☞ उत्तेजना से विचार
☞ विचार से भावना
☞ और वहाँ से जीवन का निर्माण

यह दार्शनिक संरचना (कारण → परिणाम
→ संयोग/भाग्य) महान कवियों को चिंतित
करती रही है।

1. Rubaiyat of Omar Khayyam – Omar Khayyam

अंश (हिंदी में):
“चलती हुई उँगली लिखती है; और
लिखकर आगे बढ़ जाती है:
न तुम्हारी भक्ति, न तुम्हारी बुद्धि
उसे वापस बुला सकती है
कि आधी पंक्ति भी मिटा दे।”

2. Auguries of Innocence – William Blake

अंश (हिंदी में):
“रेत के एक कण में संसार देखना
और एक जंगली फूल में स्वर्ग,
अपने हाथ की हथेली में अनंत को थामना
और एक घंटे में अनंत काल को देखना।”

0.2 यादच्छिक उद्दीपन यादच्छिक प्रतिक्रियाएँ

क्या तुमने कभी सोचा है
कि आखिर कौन दबाता है
तुम्हारे मानसिक कीबोर्ड की कुंजियाँ,
तुम्हारे अकल्पनीय और अगम्य
सुपर-कंप्यूटर की?

उस चमत्कार की,
जिसे तुम अपने भीतर लिए चलते हो,
अपने सूखे या जीवित,
बड़े या छोटे सिर में?

क्या तुमने कभी सोचा है
उन आघातों की विशालता के बारे में

जो तुम्हारे जीवन के हर सेकंड में होते हैं,
चाहे तुम्हारा कंप्यूटर
बंद हो या खुला?

लेकिन बैठकर इसे मत सोचो,
शायद तुम इसे नहीं जान पाओगे,
क्योंकि हम बात कर रहे हैं खरबों की
हर सेकंड

खरबों यादृच्छिक आघात,
और उतनी ही यादृच्छिक और अचेतन,
यादृच्छिक प्रतिक्रियाएँ
उन खरबों से
तुम्हारी स्वायत्त और अनियंत्रित
कोशिकाओं की

और तुम

मुक्त इच्छा
मानते हो कि तुम्हारे पास है

थेस्सालोनिकी
आज
acadimia
nuntson

तुम्हारी कविता सबसे मौलिक
दार्शनिक प्रश्नों में से एक को व्यक्त
करती है:

☞ क्या चेतना और इच्छा यादृच्छिक
प्राकृतिक प्रक्रियाओं का परिणाम हैं?
☞ या मन के तंत्र के पीछे वास्तविक
स्वतंत्रता मौजूद है?

यह द्वंद्व (तंत्र → यादृच्छिकता →
स्वतंत्रता) सभी युगों के महान कवियों
को चिंतित करता रहा है।

1. De Rerum Natura – Lucretius

अंश (हिंदी में):

“यदि सब कुछ एक निश्चित मार्ग पर
चलता,
और कोई विचलन न होता,
कोई स्वतंत्र गति का आरंभ न होता,

तो प्रकृति कभी इच्छा को जन्म नहीं
देती।”

2. The Hollow Men – T. S. Eliot

अंश (हिंदी में):

“विचार और वास्तविकता के बीच
गति और क्रिया के बीच
गिरती है छाया।”

“इस तरह दुनिया समाप्त होती है
धमाके से नहीं
बल्कि एक धीमी आहट से।”

0.3 यादृच्छिक उद्दीपन, यादृच्छिक और अचेतन, यादृच्छिक प्रतिक्रियाएँ

लगभग हर सेकंड,
खरबों की संख्या में,
सरल या जटिल,
हम प्रतिदिन प्राप्त करते हैं
यादृच्छिक उद्दीपन।

और हर व्यक्ति प्रतिक्रिया करता है,
तीव्र या शांत,
अचेतन या यहाँ तक कि सचेत रूप से,
पूरी तरह—संपूर्णतः यादृच्छिक—
हर एक पर।

और तुम—

इन सभी पूरी तरह यादृच्छिक
प्रतिक्रियाओं को
दृढ़ता से मानते हो
कि वे तुम्हारे अपने चुनाव हैं।

थेस्सालोनिकी
आज
acadimia
nuntson

तुम्हारी कविता यह विचार व्यक्त
करती है कि:

☞ उद्दीपन यादृच्छिक हैं
☞ हमारी प्रतिक्रियाएँ भी
☞ और “स्वतंत्र इच्छा” शायद एक
भ्रम है

यह ढाँचा (यादृच्छिक उद्दीपन →
अचेतन प्रतिक्रिया → चुनाव का भ्रम)
महान कवियों को चिंतित करता रहा
है।

1. De Rerum Natura – Lucretius

अंश (हिंदी में):

“यादृच्छिक टकरावों से सब कुछ
उत्पन्न होता है,
और यदि उनकी गति में थोड़ा भी
विचलन न हो,
तो कोई स्वतंत्रता संभव न होती।”

2. The Waste Land – T. S. Eliot

अंश (हिंदी में):

“मैं तुम्हें मुट्ठी भर धूल में भय
दिखाऊँगा।”

“लंदन ब्रिज पर भीड़ बह रही थी,
इतनी अधिक,
कि मैंने नहीं सोचा था कि मृत्यु ने इतने
लोगों को मिटा दिया होगा।”